(नौतरणी संबंधी सूचना ई-ऑफिस और वेबसाइट पर प्रदर्शित करने के लिए)

सूचना

पोत परिवहन मंत्रालय की हिंदी गृह पत्रिका 'नौतरणी' के छठे अंक में प्रकाशित करने के लिए लेख आमंत्रित करना एवं प्रकाशित होने वाली रचनाओं के लिए मानदेय।

*****

सूचित किया जाता है कि पोत परिवहन मंत्रालय की हिंदी गृह पत्रिका 'नौतरणी' का छठा अंक प्रकाशित किया जाना है। इसमें प्रकाशित करने हेतु, पोत परिवहन मंत्रालय एवं इसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों से पोत परिवहन, राजभाषा हिंदी, समसामायिक एवं साहित्यिक रचनाएं जैसे लेख, कहानी, नाटक, एकांकी, कविता एवं पुस्तक समीक्षा आदि आमंत्रित किए जाते हैं। पत्रिका में प्रकाशन हेतु संपादक मंडल द्वारा चयन किए गए लेखों को निम्नानुसार मानदेय दिए जाने की व्यवस्था है:

रचना का प्रकार	मानदेय
लेख, कहानी, नाटक एकांकी :	पत्रिका में प्रकाशित नियमित लेख- 2000/-रु. (दो हजार रु.मात्र)
कविता	600/- रु. (छह सौ रु. मात्र)
पुस्तक समीक्षा	900/- रु. (नौ सौ रु. मात्र)

अत: पोत परिवहन मंत्रालय एवं इसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे 'नौतरणी' के छठे अंक में प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक रचनाएं श्रीमती निर्मला पाहवा, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिंदी अनुभाग, पोत परिवहन मंत्रालय को यथाशीघ्र उनके ई-मेल पते: nirmala.pahwa@nic.in पर या कमरा सं. 11, भूतल, परिवहन भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली में सीधे उपलब्ध करवाएं।

सूक्तियां : ई-ऑफिस पर 14 सितंबर, 2020 से प्रतिदिन एक नई सूक्ति को प्रदर्शित करने के लिए

1. राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है - महात्मा गांधी
2. भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है। - नरेंद्र मोदी (प्रधान मंत्री)
3. भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है। - अमित शाह (गृह मंत्री)
4. हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेदभाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है। - मदन मोहन मालवीय
5. हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती और उसे दृढ करती है।
   - पुरुषोत्तमदास टंडन
6. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है। - सुमित्रानंदन पंत
7. हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। - डॉ. संपूर्णानंद
8. भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी। - रवींद्रनाथ ठाकुर
9. हिंदी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है। - मौलाना हसरत मोहानी
10. हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। - स्वामी दयानंद
11. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो, तो वह देवनागरी ही हो सकती है। - जस्टिस कृष्णास्वामी अय्यर
12. वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है, जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है। - पीर मुहम्मद मूनिस
13. देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है। - रविशंकर शुक्ल
14. हिंदी चिर काल से ऐसी भाषा रही है, जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया। - डॉ. राजेंद्र प्रसाद
15. आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। - महावीर प्रसाद द्विवेदी